PICS: I NEXT

Success is never a gift

alag pahchan

अभी तीन दिन पहले उम्र के 57वें पायदान पर कदम रखने वाले चंद्र प्रकाश अग्रवाल ने गोरखपुर को नई औद्योगिक पहचान दी है. साहबगंज के परंपरागत व्यवसाय से निकलकर पांच लाख की पूंजी को वे सौ करोड़ से अधिक के साम्राज्य में बदल चुके हैं. उनकी कंपनी दो सालों से लगातार बिजनेस वर्ल्ड मैगजीन में जगह बना रही है लेकिन बाहर के बिजनेस वर्ल्ड में गोरखपुर की इमेज को बदलने के लिए वह उतने ही व्याकुल हैं. आज हम गोरखपुर के ऐसे एकमात्र व्यवसायी से परिचय करा रहे हैं जिनकी कंपनी को शेयर मार्केट में इनलिस्ट किया गया है.

कहते हैं कि सफलता इतनी आसान नहीं कि उपहार में मिल जाए लेकिन कोई लक्ष्य इतना मुश्किल भी नहीं कि जुनूनी मेहनत और संपूर्ण समर्पण से उसे हासिल न किया जा सके... बस सपने देखने का साहस करना होगा. सिटी के खूनीपुर (साहबगंज) में गोविंद प्रकाश अग्रवाल का ग्रेन बिजनेस भी ठीक ठाक चल रहा था. लेकिन उनके लड़के चंद्र प्रकाश अग्रवाल ने उसमें हाथ बंटाते बंटाते बड़ा सपना देखा. वर्ष 1974 में गोरखपुर विश्वविद्यालय से बीकॉम करने के बाद उन्होंने पिता के व्यवसाय से अलग कुछ ऐसा करने को सोचा जिसमें उन्हें जिंदगी में सेंस आफ अचीवमेंट हासिल हो. चंद्र प्रकाश अग्रवाल ने आज से 37 साल पहले ऐसी कंपनी की कल्पना की जिसका टर्नओवर एक करोड़ से अधिक हो. इस सपने ने उन्हें सोने नहीं दिया और चंद्र प्रकाश अभी हाल तक अपनी डेली रूटीन में 16 से 18 घंटे अपने सपने को पूरा करने को देते रहे हैं. कड़ी मेहनत, जुनून और समर्पण की बदौलत पांच लाख से शुरु उनका व्यवसाय कई स्टेट्स में फैलकर अभी हजार करोड़ तक पहुंच चुका है. संघर्ष के इस सफर में उनकी पत्नी मधु ने उनका पूरा साथ दिया और 1977 से लगातार परिवार की सारी जिम्मेदारियों से चंद्र प्रकाश को आजाद रखा. चंद्र प्रकाश अग्रवाल के इस सफर में उनके बड़े भाई संतोष कुमार अग्रवाल और छोटे भाई प्रेम प्रकाश अग्रवाल एकमत होकर उनके हमकदम हैं.

पीड़ित करती है गोरखपुर की निगेटिव इमेज

सिटी में निगेटिव इंडस्ट्रियल इन्वॉयरनमेंट से चंद्र प्रकाश काफी असंतुष्ट हैं. उनका मानना है कि गोरखपुर के इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट में राजनीतिज्ञों को और रुचि लेने की जरूरत है. एडमिनिस्ट्रेटिव मशीनरी से उनको उम्मीद ही नहीं है, चंद्र प्रकाश मानते हैं कि बाहर से आने वाले ब्यूरोक्रेट्स को सिटी से उतना लगाव नहीं हो पाता कि वे यहां के डेवलपमेंट के बारे में इमोशनल होकर सोचें. उनका मानना है कि इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट के लिए फेसिलिटीज के लिहाज से गोरखपुर प्रदेश के जिलों में सबसे निचले पायदान पर है. गोरखपुर की बाहर के स्टेट्स में जो निगेटिव इमेज है वह भी उन्हें पीड़ित करती है. इस संबंध में एक घटना का उल्लेख भी वह करते हैं. वर्ष 2006 में जब वह कंपनी का आईपीओ (इनीशियल पब्लिक ऑफरिंग) इशू करने के लिए ओबेरॉय होटल जा रहे थे तो रास्ते में उनके बैंकर ने उन्हें गोरखपुर का नाम लेने से मना किया. बैंकर को डर था कि गोरखपुर का नाम लेने पर आईपीओ का सबक्रिप्शन खराब हो जाएगा. लेकिन चंद्र प्रकाश ने गर्व से गोरखपुर से अपना परिचय कराया.

सपना, जो अधूरा है

चंद्र प्रकाश अग्रवाल ने बचपन में जो सपना देखा था उससे कई सौ गुना ऊंचाई उन्हें हासिल है. लेकिन फिर भी एक टीस उन्हें सालती है. गोरखपुर और आस पास के इलाकों में शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए दून स्कूल जैसी संस्थाओं को खड़ा करना उनका एक और सपना था. इसके लिए उन्होंने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर वर्ष 1992 में विकास भारती जैसे स्कूल की नींव भी डाली थी. उनकी कल्पना थी कि इस स्कूल की आमदनी से इसी स्कूल में गरीब और पिछड़े बच्चों को वर्ल्ड क्लास की एजुकेशन मुफ्त में दी जाए और आस पास के जिलों में ऐसे 100 स्कूल खोले जांएं. अनफार्चुनेटली साथियों के साथ मतभेद होने पर उन्हें इस प्रोजेक्ट से उन्हें अलग होना पड़ा लेकिन इसका अफसोस उन्हें अभी भी है.

-Avinash Chaturvedy

ACHIEVEMENT

- गैलेंट मेटल लिमिटेड को वर्ष 2006 और गैलेंट इस्पात लिमिटेड को वर्ष 2008 में शेयर मार्केट में इनलिस्ट किया गया. चंद्र प्रकाश अग्रवाल कहते हैं कि पूर्वांचल में यह स्थान किसी और कंपनी को हासिल नहीं है.
- चंद्र प्रकाश अग्रवाल की कंपनी को वर्ल्ड फेम की मैगजीन बिजनेस वर्ल्ड लगातार दो साल से टॉप 500 कंपनी में इनलिस्ट कर रही है.
- आस पास के आठ स्टेट्स में गैलेंट इस्पात एकमात्र कंपनी है जिस तक पहुंचने के लिए रेलवे ने स्पेशल रेल लाइन बिछाई है.
- आईपीओ जारी होने के बाद उम्मीद से चार गुना अधिक सब्सिक्रिप्शन मिला.

चंद्र प्रकाश अग्रवाल.

पांच लाख से करोड़ों का सफर

- 1984 : इलाहाबाद बैंक के फायनेंस के साथ पांच लाख की लागत से गोरखनाथ स्थित इंडस्ट्रियल एरिया में प्रेम उद्योग (ऑयल मिल) की स्थापना.
- 1984 : बरगदवां में एसबीआई के फायनेंस समेत छह करोड़ की लागत से प्रेम उद्योग की स्टील यूनिट की स्थापना.
- 1988 : पंजाब नेशनल बैंक के फायनेंस सहित 1.25 करोड़ की लागत से गोविंद मिल्स लिमिटेड की स्थापना जिसमें आठ महीने के रिकार्ड समय में फ्लोर मिल की स्थापना.
- 2001 : बस्ती में फ्लोर मिल की स्थापना.
- 2003 : परतावल महराजगंज में दुर्गा एग्रो कंपनी को टेकओवर किया.
- 2005 : गांधीधाम गुजरात में एसबीआई के सहयोग से तीन सौ करोड़ रुपये लागत वाली इंटीग्रेटेड स्टील एंड पावर प्लांट की स्थापना.
- 2007 : एसबीआई के सहयोग से सहजनवां गीडा में 350 करोड़ रुपये लागत वाली इंटीग्रेटेड स्टील एंड पावर प्लांट की स्थापना.
- कर्नाटक में नए स्टील प्लांट के स्थापना की तैयारी पूरी हो गई है. इसके लिए 100 एकड़ की जमीन भी खरीदी जा चुकी है.

PROFILE

Date of birth	:	25 दिसंबर 1955 गोरखपुर में
Parents	:	स्व. गोविंद प्रसाद अग्रवाल और स्व. द्रौपदी अग्रवाल
Married to	:	मधू अग्रवाल 1977 में
Children	:	प्रियंका (33), प्रिया (30) और मयंक (27)
Education	:	बीकॉम, 1974 में गोरखपुर विश्वविद्यालय से